डॉ. बी.आर. आंबेडकर एवं उनका सम्यक् धर्म

—मेनिका साकेत

महान समाज सुधारक एवं भारतरत्न, विधिवेत्ता एवं अपनी सदी के मानवता के प्रति महान नायक बाबासाहेब आंबेडकर जी के अनुसार ''धर्म ऐसा होना चाहिए, जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व सिखाता है, क्योंकि एक व्यक्ति के विकास के लिए तीन भावों की आवश्यकता होती है—जो करुणा, समानता और स्वतंत्रता है।'' उनका मत था कि 'धर्म मनुष्य के लिए है, न कि मनुष्य धर्म के लिए है।' जाति प्रथा के चलते हिंदू धर्म में इनका अभाव था, इसलिए उन्होंने 14 अक्तूबर, 1956 को नागपुर स्थित दीक्षा भूमि में तीन लाख से अधिक अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अपना लिया था।

बौद्ध दर्शन साम्यवाद और अहिंसात्मक विकास पर आधारित है, जो उनके द्वारा बौद्ध धर्म अपनाने का प्रमुख कारण था। यह साम्यवाद दक्षिण एशिया में उन्हें देखने को मिला। उनके अनुसार दुनिया के अन्य धर्म में अहिंसात्मक साम्यवाद नहीं मिलता, जो उन्हें बौद्ध धर्म में मिला। यह प्रज्ञा, करुणा और समता प्रदान करता है—प्रज्ञा अर्थात् पारलौकिक और अंधविश्वास शक्तियों के विरुद्ध समझदारी (स्व ज्ञान जागृति), करुणा अर्थात् प्रेम और पीड़ित के प्रति संवेदना, समता अर्थात् नस्ल, लिंग, जाति व धर्म के आधार पर भेद किए बिना विभाजन से अलग, मानवीय बराबरी के ये तीन सिद्धांत अच्छे और सुखी जीवन हेतु बौद्ध धर्म की दीक्षा है। बौद्ध दर्शन की बात करें तो इसमें बोधिसत्व का महत्त्व है। बोधिसत्व पथ का लक्ष्य पूर्ण बुद्धत्व की स्थिति है, बोधि यानी जागृत, वहीं बुद्ध का अर्थ जागृत व्यक्ति से है। इसमें 'बोधिसत्व मैत्रेय' का वर्णन है, जो ज्ञात भविष्य के बुद्ध के

अध्येता, लॉ विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
Email : menikasaketrewa@gmail.com

रूप में जाने जाते हैं, जो भविष्य में जागृति प्राप्त करेगा और गौतम बुद्ध के बाद दुनिया का सर्वोच्च बुद्ध बनेगा।' ये महायान में पूजे जाते हैं। बौद्ध धर्म की शाखाएं इस प्रकार हैं—वज्रयान—जिसमें तंत्र और मंत्र विद्या द्वारा निर्वाण प्राप्ति का मार्ग सिखाया जाता है। हीनयान—यह निम्न वर्ग की पुरानी शाखा है, जो नियमों और सिद्धांतों में परिवर्तन का विरोध करती है। थेरवाद—यह प्राचीन बौद्ध दर्शन जिसे पाली लिपि में ज्यों का त्यों संरक्षित किया गया है, उसका समर्थन करते हैं। महायान—यह प्रारंभिक बौद्ध धर्म की शिक्षाओं और ग्रंथों को स्वीकार करता है, लेकिन यह विभिन्न सिद्धांतों जैसे—विज्ञानवाद, शून्यता के सिद्धांत आदि को मान्यता देता है।

महायान में 'प्रज्ञापारमिता' को माना जाता है, जिसका अर्थ—''बुद्धि की पूर्णता और आनुवांशिक ज्ञान है।'' यह वास्तविकता की प्रकृति को देखने के एक सिद्ध तरीके के साथ महायान सूत्रों के विशेष निकाय को संदर्भित करती है। इसमें मध्यम मार्ग का संदर्भ है, जो सही दृष्टिकोण बताता है। यह विनाशवाद और शाश्वतवाद के आध्यात्मिक चरम से स्पष्ट होता है तथा यह अस्तित्व व गैर-अस्तित्व के द्वंद्व पर निर्भर है। बुद्ध इस मध्यमार्ग के सही दृष्टिकोण को सिखाते हैं।

नवयान—यह बौद्ध धर्म की आधुनिक शाखा है, जिसमें सत्तर प्रतिशत से अधिक अनुसूचित जाति के लोग हैं जिन्होंने बौद्ध धर्म अपनाया है।

बौद्ध धर्म में 'विनय और धम्म की दीक्षा' दी जाती हैं। बुद्ध के अनुसार ''धम्म का अर्थ—धारण करना है।' बौद्ध धर्म के तीन रत्न—'बुद्ध, धम्म और संघ' हैं। इसकी शिक्षा में—पंचशील (हिंसा, चोरी, व्यभिचार, नशा न करना तथा झूठ न बोलना), दस परिमितताएं उदारता, दान, नैतिकता, त्याग, शिक्षा, अंतर्दृष्टि, ऊर्जा, धैर्य, सत्यता, संकल्प, प्रेम—कृपा, समभाव तथा अष्टांगिक मार्ग या नियम—सम्यक दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि को शामिल किया गया है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार ''सनातन का अर्थ शाश्वत है'' जिसे हिन्दू धर्म में अधिगृहीत किया गया है। पूर्व में सनातन धर्म एक प्राकृतिक धर्म था, जिसमें कोई असमानता नहीं थी, परंतु मनुस्मृति व वेदों में चातुर्यवर्ण की व्याख्या मनुष्यों के कर्मों के आधार पर वर्गीकरण को दर्शाता है, जिसमें असमानता का भाव उत्पन्न होता है। इस प्रकार बौद्ध धर्म को बाबासाहेब द्वारा अपनाने का प्रमुख कारण जाति-पाँत की असामाजिक विसंगतियों से दबित वर्ग के व्यक्तियों को दूर करके मानवीय समानता को स्थापित करना था, जो बुद्ध के सम्यक् धर्म अपनाने से संभव हुआ।[1]

बौद्ध धर्म में कई प्रशंसक होने के साथ कुछ लेखकों द्वारा इसकी आलोचना भी की गई है। प्रशंसक के रूप में डॉ. आंबेडकर जी ने अपनी पुस्तक 'बुद्ध और उनका धर्म' में बुद्ध के जीवन और उनकी शिक्षाओं पर प्रकाश डाला है तथा उसे सरल रूप में व्यक्त किया है। पुस्तक के तृतीय खंड में बुद्ध ने जो सिखाया है, उसका वर्णन है। इसमें उन्होंने धम्म, अधम्म और सधम्म को बताया है। बुद्ध ने कर्म के स्थान पर नैतिकता को इस खंड में धर्म का सार बताया है। पंचम खंड में संघ का वर्णन है। इसके चौथे भाग में भिक्षु और गृहस्थ हेतु धर्म दीक्षा को बताया गया है। पंचशील गृहस्थ व्यक्ति द्वारा भी अपनाया जाता है।

इसके द्वितीय खंड का ''सातवां भाग—प्रमुख रूप से स्त्रियों की धम्मा दीक्षा से संबंधित है। लैंगिक समानता को ध्यान में रखते हुए इसका वर्णन करना उचित होगा, जिसमें बुद्ध द्वारा प्रथमतः महिलाओं को प्रवज्या हेतु अस्वीकार कर दिया जाता है, इसका मूल कारण स्त्रियों का व्यावहारिक स्वभाव था। परन्तु बाद में महाप्रजापति गौतमी द्वारा आठ नियमों के पालन हेतु जिम्मेदारी लेने पर परिव्रजिका धारण करने हेतु अनुमति दे दी गई, तब पांच सौ से अधिक शाक्य महिलाओं ने प्रवज्या धारण की।

बुद्ध के शिष्य—नदक द्वारा उन्हें विनय और धम्म की दीक्षा दी गई। प्रवज्या का अर्थ—''घर-गृहस्थी व सांसारिक सुख त्याग कर ज्ञान मार्ग हेतु ब्रह्मचर्य अपनाना और संघ की शरण में आकर धम्म व विनय की शिक्षा सिर मुंड़वाकर शिशु बनना होता है।''

इसी भाग में प्रकृति नामक चंछालिका का प्रसंग आता है, जिसमें इस कन्या को बुद्ध के शिष्य आनंद, जिसने प्रवज्या व ब्रह्मचर्य धारण किया था, से प्रेम हो गया। तब कई प्रयासों के बाद उसने विवाह हेतु संघ में प्रवेश व भिक्षुणी बनने की ज़िद की। तब तथागत बुद्ध ने उसके ज्ञान चक्षु यह कहते हुए खोले कि तुम आनंद के जिस अंग या श्रीर से प्रेम करती हो वह सब रक्त, मांस, मल आदि गंदगी से भरा हुआ है और सहवास करने पर संतान उत्पन्न होती है। यदि जीवन है तो मृत्यु भी है जो संसार में दुःख का कारण है। तब उस कन्या द्वारा विवाह की इच्छा त्याग दी गई और उसने भी भिक्षुणी बनकर ज्ञानमार्ग को अपना लिया। यद्यपि मृत्यु रूपी दुःख के चक्र से निर्वारण पाने हेतु जीवन की इच्छाओं और भावनाओं को न जीना और उसका दमन शरीर रूपी मंदिर का मलिन बना देना, एक प्रकार से सांसारिक सुख की उपेक्षा मात्र है, जो प्रकृति के शाश्वत नियम और संसार प्रवज्या केवल ऐसी स्त्रियों के लिए ही उचित है, जो सांसारिक भोगने के बाद केवल मन की शांति हेतु संघ धारण करना चाहती हैं या संसार से उनका मोह भंग हो चुका है।[2]

लेखक धनंजय कीर द्वारा अपनी पुस्तक 'डॉ. आंबेडकर जीवन और मिशन' में बाबासाहेब को बौद्ध धर्म का पुनरुद्धारक के रूप में वर्णित किया गया है। इसमें वर्णित है कि महाबोधि सोसाइटी ऑफ इंडिया, कलकत्ता ने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु उन्हें इतिहास के सबसे महान पैरोपकार के रूप में व्यक्त किया है। बाबासाहेब ने दक्षिण एशिया देशों में भ्रमण किया और बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित किया। संविधान के अनुच्छेद 31 के अनुसार, बुद्ध जयंती पर भारत में अवकाश घोषित किया गया। उन्होंने दो कॉलेज बंबई और औरंगाबाद में स्थापित किए, जहाँ 3100 छात्रों के साथ बौद्ध धर्म के अध्ययन को प्रोत्साहित किया गया। पुणे में बुद्ध की प्रतिमा पुनः 100 वर्ष बाद स्थापित कराई गई।[3]

आंबेडकर जी ने ''रीडल्स इन हिंदुइज्म' पुस्तक में लिखा है, ''हिन्दू सामाजिक व्यवस्था यूं ही अलोकतांत्रिक नहीं है, इसे अलोकतांत्रिक बनाया गया है। इसमें वर्णों, जातियों और बहिष्कृतों में विभाजन सिद्धांत नहीं बल्कि आदेश हैं।'' उन्होंने मनुस्मृति पर कल्लुका भट्ट की टिप्पणी का हवाला देते हुए कहा कि 'सनातन' शब्द का उपयोग मूल रूप से वेदों के शाश्वत पूर्व अस्तित्व और उनमें मौजूद ज्ञान और उपदेशों की अपरिवर्तनीय प्रकृति पर जोर देने के लिए किया गया। बाद में ब्राह्मणों ने हिंदू सभ्यता को दर्शाने के लिए इस शब्द का प्रयोग किया। उन्होंने हिन्दू प्रथाओं की शाश्वतता का खण्डन किया और प्रकाश डाला कि समय के साथ उसमें बदलाव हुआ है। एनसीईआरटी की दसवीं कक्षा की इतिहास की पुस्तक 'भारत एवं समकालीन विश्व-II' में 'भारत में राष्ट्रवाद' में कहा गया है कि लंबे समय तक कांग्रेस ने सनातनियों, रूढ़िवादी उच्च जाति के हिन्दुओं को नाराज़ करने के डर से दलितों की उपेक्षा की थी।''[4] डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा लिखी गई पुस्तक में, 'धम्मपद' की प्रस्तावना में कहा गया है कि 'धम्मपद की शिक्षा-वृत्ति को पूरी तरह से दबाना न्यूरोसिस उत्पन्न करना है, उन पर पूर्ण लगाम देना भी न्यूरोसिस में होना है।' आधुनिक मनोविज्ञान द्वारा समर्थित है। इनके अनुसार एक आलोचनात्मक कथन भी है, जिसमें मूलर (1901) को उद्धृत करते हैं, ''जो कहते हैं कि बौद्ध धर्म सर्वोच्च ब्राह्मणवाद है? जिसे लोकप्रिय बनाया गया है। गूढ़ चीज को समाप्त कर दिया गया है, पुरोहितवाद को भिक्षुओं में प्रतिस्थापित कर दिया गया है और ये भिक्षु अपने वास्तविक चरित्र में जंगल में प्रबुद्ध निवासियों के उत्तराधिकारी और प्रतिनिधि हैं, पूर्व युगों का। (राधाकृष्णन, 1950, पृष्ठ 51, 151 से)[5]

अरविंद शर्मा ने आलोचना की है कि डॉ. आंबेडकर हिन्दू धर्म के प्रतिद्वंद्वी के रूप में अपनी सदी की महान घटना थे। उन्होंने राजनीति में बहुसंख्यक शासन और अल्पसंख्यक का संरक्षण किया।'' वे हिन्दू धर्म के बाहर बौद्ध विकल्प के अभ्यास के प्रतिपादक थे।''[6]

वर्तमान समय में हिन्दू धर्म को सनातन मानने में भी कई वाद-विवाद किए जाते हैं, जिसमें हाल ही के भाषण में तमिलनाडु राज्य सरकार के मंत्री उदयनिधि ने 'सनातन उन्मूलन' शब्द का प्रयोग किया।[7] उपर्युक्त तथ्यों से एक बात स्पष्ट होती है कि ''धर्म मानवता आधारित मूल्यों के सरल जीवन पर आधारित होना चाहिए, जो पौराणिक वेदों में शाश्वत और प्राकृतिक नियम थे व जिसमें कोई भेद नहीं था और यही स्पष्टता बुद्ध द्वारा 'वास्तविकता के ज्ञान 'प्रज्ञापारमिता' द्वारा बताई गई है। इन्होंने मध्य मार्ग बताया कि कैसे विनाशवाद और शाश्वतवाद के आध्यात्मिक चरम से मनुष्य को दुःख से निवारित कर निर्वाण प्रदान किया जा सकता है।

डॉ. आंबेडकर ने ''बुद्ध के सम्यक् धर्म का प्रचार उचित समझा, जो कि स्वतंत्र भारत और मानवता के लिए सही था, क्योंकि जिस तरीके से वेदों के शाश्वतता को सनातन धर्म में हिन्दुओं द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया तथा कई कुप्रथाएं उत्पन्न कर दी गईं, तब सनातनी धर्म के प्रचारक स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में अनुष्ठानिक ब्राह्मणवाद के विरोध हेतु 'आर्य समाज' की स्थापना की थी। बाल विवाह, अस्पृश्यता और महिलाओं की शिक्षा से वंचित करना जैसी कुप्रथाओं का विरोध कर समाज को सुधारने का प्रयास किया था। इस प्रकार डॉ. आंबेडकर जी द्वारा बौद्ध धर्म को पुनर्जीवित करना, जो सामाजिक समानता और सुधार द्वारा मानवता स्थापित करने हेतु उचित था।

वर्तमान में भारत का संविधान भी मानवता और समतामूलक सिद्धांतों पर आधारित है, जो उनके मौलिक अधिकारों द्वारा सुरक्षित है। यही डॉ. आंबेडकर का सम्यक् धर्म है।

व्यक्ति समानता और मानवतापूर्ण सिद्धांतों को अपनाकर अहिंसात्मक और शांतिमय जीवन यापन करे तथा राष्ट्र के विकास में लैंगिक समानता स्थापित करते हुए, सामाजिक न्याय के साथ मिलकर योगदान दें और सतत् प्रयासरत रहें यही आंबेडकर का मानव धर्म था। संविधान के प्रस्तावना मूल्यों की सार्थकता तभी मिलेगी जब देश के हैप्पीनेस इंडेक्स में वृद्धि की जा सकेगी। सम्यक् दृष्टि की अभिव्यक्ति भी तभी संभव है चाहे वह धार्मिक हो या संवैधानिक।

संदर्भ :

1. परिभाषाएं–बौद्ध दर्शन–वेबसाइट
   (www.en.m.wikipedia.org>B._R._Ambedkar)
2. पुस्तक 'बुद्ध और उनका धर्म', लेखक डॉ. बी.आर. आंबेडकर, प्रकाशन 6 अप्रैल, 1956,

जापान डिजिटल पब्लिकेशन (शिक्षा हेतु अंतरराष्ट्रीय संगठन), (पृष्ठ क्र. 92, 100-132, 193)
3. पुस्तक 'डॉ. आंबेडकर जीवन और मिशन', लेखक धनंजय कीर, प्रकाशन 16 मई, 1954, बॉम्बे पॉपुलर प्रकाशन (बम्बई जी आर भटकल), (पृष्ठ क्र. 481, 482)
4. रिडल ऑफ हिंदुइज्म, एनसीईआरटी एवं अन्य, वेबसाइट (www.telegraphindia.com>india...)
5. पुस्तक 'धम्मपद', लेखक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, (आलोचना), वेबसाइट– (www.en.wikipedia.org/wiki/Dhammpad_(Radhakrishanan_translation)_)
6. आलोचना–अरविंद शर्मा वेबसाइट (www.jstore.org>stable...)
7. उदयनिधि वाद, वेबसाइट (https://thewire.in>politics>thechallenge-to-sanatana...)